युवा जीवन

अगस्त 2025

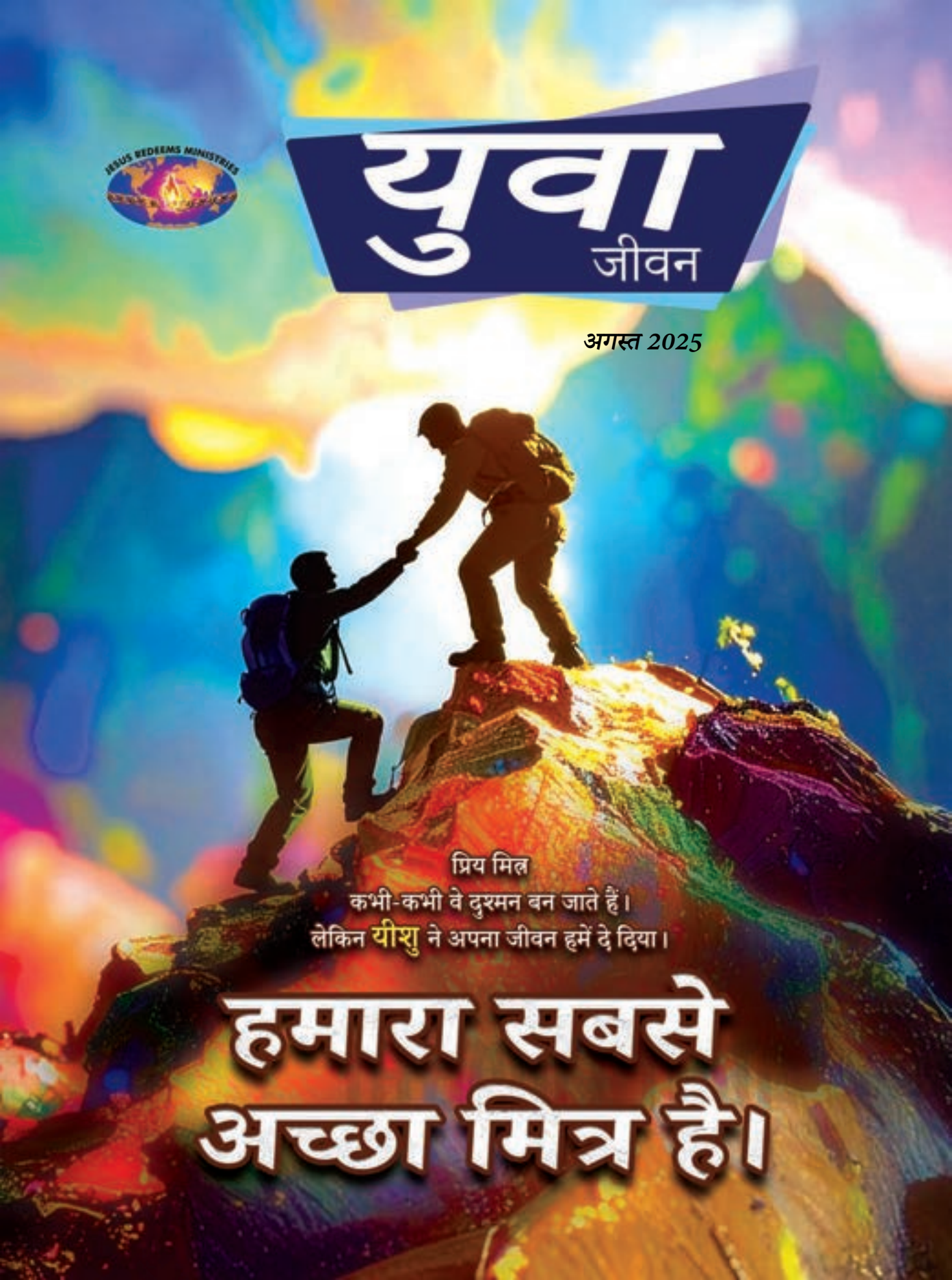

प्रिय मित्र
कभी-कभी वे दुश्मन बन जाते हैं।
लेकिन **यीशु** ने अपना जीवन हमें दे दिया।

हमारा सबसे अच्छा मित्र है।

प्रस्तावना

प्रिय युवा मित्रों,

हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के अतुलनीय नाम में आपको अभिवादन!

इस सत्य को कभी न भूलें—आप युवा लोग, सामर्थी हैं! बाइबल में, परमेश्वर ने हर उस युवा को सशक्त और पराक्रमी रूप से इस्तेमाल किया जो उसकी आज्ञा का पालन करता था। उनमें दो वीर पुरुष थे—दाऊद और उसका घनिष्ठ मित्र योनातान। उनकी मित्रता पीढ़ियों तक एक उज्ज्वल उदाहरण बनी रहेगी।

हालाँकि योनातान सिंहासन के लिए अगला दावेदार था, फिर भी वह दाऊद से इतना प्रेम करता था कि उसने परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप अपने अधिकारों और इच्छाओं को त्याग दिया। इसी महान प्रेम के कारण, योनातान ने दाऊद को अपना राजसी वस्त्र, अपनी तलवार, अपनी कमरबंद, अपना धनुष और अपनी कमरबंद— हर चीज़ जो राजा होने का प्रतीक सब कुछ दे दिया। ऐसा करके, उसने दाऊद को एक राजा जैसा वस्त्र पहनाया और उसमें आनन्दित हुआ। योनातान ने दाऊद की रक्षा के लिए अपने पिता के क्रोध और घृणा को स्वीकार किया और उसकी ढाल बनकर खड़ा रहा। यहाँ तक कि जब शाऊल दाऊद को मारने पर तुला हुआ था, तब भी योनातान ने बार-बार साहसपूर्वक हस्तक्षेप किया और उसका बचाव करते हुए कहा, "दाऊद निर्दोष है; वह धर्मी है!" अगर कोई एक व्यक्ति जो सच्ची मित्रता का सबसे बेहतरीन उदाहरण है, तो वह योनातान है। उसने दाऊद का वफ़ादार मित्र बनने के लिए अपने सपनों, महत्वाकांक्षाओं और भविष्य के गौरव का त्याग कर दिया।

हाँ, ऐसी मित्रता सचमुच थी!

लेकिन आजकल, मित्रता अक्सर समस्याओं, पाप और त्रासदी की ओर ही ले जाती है। हम मित्रता के नाम पर की गई हत्याओं, तथाकथित मित्रों के साथ मिलकर की गई चोरियों और इन रिश्तों से उपजे झगड़ों की खबरों से भरी सुर्खियाँ देखते हैं। आजकल की मित्रता अक्सर स्वार्थ, छल और चालाकी से भरी होती है।

यीशु के बिना कोई भी रिश्ता भ्रम, असफलता और दर्द में ही खत्म होता है। लेकिन जब यीशु आपका मित्र बन जाता है, तो आप योनातान की तरह दाऊद का मित्र बनने के लिए सशक्त हो जाते हैं—निःस्वार्थ, परमेश्वर का आदर करने वाला और वफ़ादार। आपकी मित्रता अब स्वार्थी नहीं रहेगी। बल्कि, इसमें परमेश्वर की इच्छा पूरी करने की इच्छा होगी। परमेश्वर को प्रसन्न करने वाले मार्ग पर चलने का एक पवित्र भय होगा।

तो, प्रिय युवा मित्र, कई लोगों के लिए उठने और चलने का सहारा बनो।

दूसरों के लिए ऊँचे चढ़ने की सीढ़ी बनो। कई लोगों को सही राह पर चलने के लिए एक सेतु बनो। अपनी मित्रता से दूसरों को धार्मिकता के मार्ग पर ले चलो।

अपनी मित्रता से कई लोगों को फायदा पहुँचाओ, नुकसान नहीं।

अपने जीवन को किसी और के विकास और महानता का कारण बनने दो।
कई लोगों को धार्मिकता के दायरे में लाने के लिए आप क्या कीमत चुकाने को तैयार हैं?
युवा मित्र, अगर आप दाऊद और योनातन की तरह यीशु के साथ उठ खड़े हो, तो परमेश्वर तुम्हारे माध्यम से तुम्हारे नगर में भलाई और बड़ी जीत लाएगा।

जब तुम उठोगे, तो कई अन्य लोग भी तुम्हारे साथ उठेंगे। हमारी पीढ़ी को तुम जैसे युवाओं की ज़रूरत है जो युवा समुदाय को चुनौती दे सकें और उसका उत्थान कर सकें।

यीशु मसीह में दृढ़ रहो। *आगे बढ़ो। विजयी बनो!*

मसीह के मिशन में
मोहन सी. लाजर

मैं एक प्रार्थना योद्धा हूँ।

मेरे प्रिय भाइयों और बहनों,

पिछले छह महीनों में, "मैं एक प्रार्थना योद्धा हूँ" शीर्षक वाली श्रृंखला के अंतर्गत, हमने विभिन्न प्रकार की प्रार्थनाओं का अध्ययन किया है—मध्यस्थ प्रार्थना, विनती, अश्रुपूर्ण प्रार्थना, उपवास प्रार्थना, करुणामय प्रार्थना और युद्ध प्रार्थना। इस महीने, हम इस बात पर गहराई से विचार करेंगे कि एलिय्याह ने कैसे गिड़गिड़ाकर प्रार्थना की, उसने किस लिए प्रार्थना की, और क्या उसकी सच्ची प्रार्थनाओं का उत्तर मिला।

सच्ची प्रार्थना

"एलिय्याह भी हमारी तरह एक मनुष्य था। उसने गिड़गिड़ाकर प्रार्थना की कि वर्षा न हो, और साढ़े तीन वर्ष तक पृथ्वी पर वर्षा नहीं हुई" (याकूब 5:17)। हालाँकि एलिय्याह एक भविष्यवक्ता था, बाइबल इस बात पर ज़ोर देती है कि वह भी हमारी तरह ही था—एक साधारण मनुष्य। फिर भी, जब उसने प्रार्थना की, तो आकाश ने साढ़े तीन वर्ष तक वर्षा रोके रखी। एलिय्याह ने लंबी प्रार्थनाएँ नहीं कीं। उसके शब्द कम थे, लेकिन उसकी प्रार्थनाएँ उद्देश्य और सामर्थ से भरी थीं। परमेश्वर ने ऐसी केंद्रित प्रार्थनाओं को सुना और उनका उत्तर दिया।

"हे प्रभु, मेरी प्रार्थना सुन, मेरी प्रार्थना सुन, कि ये लोग जान लें कि हे प्रभु, तू ही परमेश्वर है, और तू ही उनके मनों को फेरता है" (1 राजा 18:36-37)। बाल के 450 नबियों के सामने, एलिय्याह अकेले खड़े थे। एक छोटी लेकिन सच्ची प्रार्थना के साथ, उन्होंने यह साबित करने की कोशिश की कि "प्रभु—वही परमेश्वर है।" जैसे ही उन्होंने प्रार्थना पूरी की, स्वर्ग से आग बरसी और होमबलि, लकड़ी, पत्थर, धूल और यहाँ तक कि गड्ढे के पानी को भी भस्म कर दिया (1 राजा 18:38)।

हमारी प्रार्थनाएँ भी हमेशा लंबी नहीं होनी चाहिए। सबसे ज़्यादा मायने रखती हैं उनकी गहराई, इरादे और विश्वास। परमेश्वर पर विश्वास के साथ की गई एक छोटी लेकिन सार्थक प्रार्थना, स्वर्ग को भी हिला सकती है। हालाँकि, इसका मतलब यह नहीं है कि हमें हमेशा संक्षिप्त प्रार्थना करनी चाहिए। महत्वपूर्ण बात यह है कि छोटी होने पर भी, हमारी प्रार्थनाएँ जानबूझकर, विश्वास से भरी और परमेश्वर पर अटूट विश्वास से भरी हों। तभी हमें निश्चित रूप से उत्तर मिलेंगे।

एलिय्याह की मानवता और वीरता

हालाँकि एलिय्याह एक भविष्यवक्ता थे, फिर भी उन्होंने कठिनाइयों और अकाल का सामना किया। एक बार उन्होंने पुकारा, "हे प्रभु, अब बहुत हो गया; मेरी जान ले लो!" ईज़ेबेल की धमकियों का उन पर इतना गहरा असर हुआ। हालाँकि एलिय्याह हमारी तरह इंसान और कमज़ोर थे, फिर भी उन्होंने परमेश्वर पर भरोसा नहीं छोड़ा—और परमेश्वर ने भी उनका साथ नहीं छोड़ा।

• विश्वास से भरा व्यक्ति: एलिय्याह ने प्रार्थना की और एक मृत बच्चे को जीवित कर दिया।

• आज्ञाकारी व्यक्ति: जब परमेश्वर ने उन्हें अकाल के दौरान नाले के किनारे रहने के लिए कहा, तो उन्होंने आज्ञा मानी। जब उन्हें सारपत में विधवा के साथ रहने का निर्देश दिया गया, तो उन्होंने फिर से आज्ञा मानी।

• साहसी व्यक्ति: उन्होंने निडरता से राजा अहाब और इस्राएल के लोगों का सामना किया और घोषणा की, "यदि बाल परमेश्वर है, तो उसका अनुसरण करो; लेकिन यदि यहोवा परमेश्वर है, तो उसका अनुसरण करो।"

• एक सामर्थी प्रार्थना योद्धा: एलिय्याह ने बारिश रोकने और उसे वापस लाने के लिए सच्चे मन से प्रार्थना की—और परमेश्वर ने उसका उत्तर दिया।

• आग और सामर्थ से भरा व्यक्ति: एलिय्याह ने स्वर्ग से आग बरसाई, कई चमत्कार किए, राजतंत्र के विरुद्ध साहसपूर्वक खड़ा हुआ, बाल के नबियों को हराया, पवित्र आत्मा के अभिषेक में चला, और उसे सबसे महान नबियों में से एक माना जाता है।

एलिय्याह की पाँच सच्ची प्रार्थनाएँ

✦ बारिश रोकने के लिए: जब इस्राएली बाल की पूजा करते थे, एलिय्याह ने सूखे के लिए प्रार्थना की, और परमेश्वर ने बारिश रोक दी (याकूब 5:17)।

✦ विधवा के बेटे को ज़िंदा करने के लिए: अकाल के दौरान, सारपत के बेटे की विधवा की मृत्यु हो गई। एलिय्याह ने तीन बार प्रार्थना की, और परमेश्वर ने लड़के को जीवनदान दिया (1 राजा 17:21-22)।

✦ यह सिद्ध करना कि प्रभु ही परमेश्वर है: बाल और प्रभु के बीच एक राष्ट्रीय संघर्ष में, एलिय्याह ने परमेश्वर से स्वयं को प्रकट करने के लिए प्रार्थना की—और स्वर्ग से आग बरसी (1 राजा 18:36-37)।

✦ वर्षा लाना: सूखे के बाद, एलिय्याह ने घुटने टेके और वर्षा के लिए सात बार प्रार्थना की। परमेश्वर ने वर्षा भेजी (1 राजा 18:42-45)।

✦ मरने के लिए: जब ईज़ेबेल ने उसे मारना चाहा, तो एलिय्याह ने पुकारा, "हे प्रभु, बस कर; मेरा प्राण ले ले।" परन्तु परमेश्वर ने उसका प्राण नहीं लिया—इसके बजाय, वह एलिय्याह को जीवित ही स्वर्ग ले गया (1 राजा 19:4)।

प्रिय युवा प्रार्थना के योद्धाओं! परमेश्वर ने एलिय्याह की पाँचों प्रार्थनाओं का उत्तर दिया। यदि हम भी एलिय्याह की तरह, उद्देश्य और जोश के साथ प्रार्थना करें, तो हमें भी अलौकिक उत्तर प्राप्त होंगे। आइए हम दृढ़ निश्चय और हृदय से प्रार्थना करें और पृथ्वी पर स्वर्ग की सामर्थ का अनुभव करें!

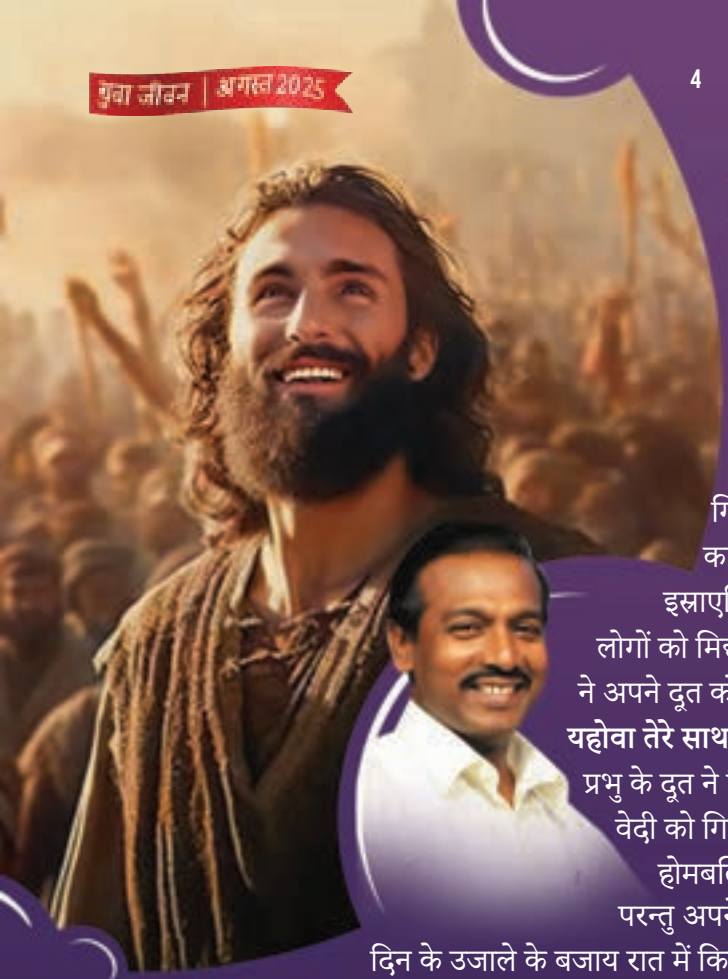

यदि परमेश्वर तुम्हारे साथ है!

गिदोन उस समय में था जब इस्राएलियों पर मिद्यानियों का बहुत अत्याचार हो रहा था। अपनी पीड़ा के कारण, इस्राएलियों ने प्रभु को पुकारा। प्रत्युत्तर में, परमेश्वर ने अपने लोगों को मिद्यानियों के हाथों से छुड़ाने के लिए गिदोन को चुना। प्रभु ने अपने दूत को गिदोन के पास भेजा और कहा, **"हे वीर योद्धा, यहोवा तेरे साथ है! अपनी पूरी शक्ति से जा..." (न्यायियों 6:12)।** प्रभु के दूत ने गिदोन को निर्देश दिया कि वह अपने पिता की बाल की वेदी को गिरा दे और प्रभु के लिए एक नई वेदी बनाए और उस पर होमबलि चढ़ाए। गिदोन ने प्रभु की आज्ञा का पालन किया- परन्तु अपने परिवार और नगरवासियों के डर से, उसने यह काम दिन के उजाले के बजाय रात में किया **(न्यायियों 6:26-27)।**

वही गिदोन जो दिन में अपने पिता की वेदी को नष्ट करने से डरता था, उसे परमेश्वर ने टिड्डियों के झुंड जितनी विशाल सेना को हराने के लिए चुना। यहोवा, गिदोन के डरपोक स्वभाव को जानते हुए, उसे दयापूर्वक बल प्रदान किया। उसने गिदोन से कहा, **"यदि तू आक्रमण करने से डरता है, तो अपने सेवक फूरा को संग लेकर छावनी में जाकर उनकी बातें सुन। उसके बाद, तुझे छावनी पर आक्रमण करने का साहस मिलेगा।" (न्यायियों 7:9-15)।** परमेश्वर ने इस झिझकते, कमज़ोर विश्वासी व्यक्ति को चुना, उसके विश्वास को दृढ़ किया और उसे एक साहसी योद्धा में बदल दिया। और इस कभी भयभीत व्यक्ति, गिदोन के माध्यम से, मिद्यानियों की विशाल सेना-जो टिड्डियों और समुद्र तट की रेत के समान असंख्य थी-आसानी से परास्त हो गई क्योंकि यहोवा उसके साथ था।

प्रभु ने गिदोन के माध्यम से एक महान उद्धार किया। अम्मोनी, मिद्यान, अमालेक और पूर्व के लोग तितर-बितर हो गए। शत्रुओं को कुचल दिया गया और देश को मुक्त कर दिया गया। उसी तरह, यदि आप स्वयं को समर्पित कर दें, तो परमेश्वर आपके माध्यम से भी सामर्थी रूप से कार्य कर सकता है।

जब परमेश्वर आपके साथ हैं...

सफलता आपके साथ होगी

"प्रभु यूसुफ के साथ रहे और वह अपने मिस्री स्वामी के घर में रहने लगा। जब उसके स्वामी ने देखा कि प्रभु उसके साथ हैं और प्रभु उसके हर काम में उसे सफलता देते हैं..." (उत्पत्ति 39:2–3)।

यूसुफ को परमेश्वर की निरंतर उपस्थिति का गहरा एहसास था—अपने परिश्रम में, प्रलोभन के समय, जेल में, और यहाँ तक कि सत्ता में आने के बाद भी। वह पूरे मन से प्रभु से जुड़ा रहा। और इसी वजह से, वह एक सफल व्यक्ति बना।

अगर आप अपने परिवार, अपने व्यवसाय या अपनी पढ़ाई में सफलता देखना चाहते हैं, तो परमेश्वर आपके साथ होना चाहिए। तभी आप अपने हर काम में सफल होंगे।

आप बुद्धिमानी से चलेंगे

"दाऊद अपने सब कामों में बुद्धिमानी से काम करता था, और प्रभु उसके साथ था। जब शाऊल ने देखा कि दाऊद कितनी बुद्धिमानी से काम करता है, तो वह उससे डर गया।" (1 शमूएल 18:14–15)।

दाऊद ने सामर्थी योद्धा गोलियत का सामना केवल पत्थरों और एक गोफन से किया—और परमेश्वर द्वारा दी गई बुद्धि से, वह जीत गया। जब राजा शाऊल के माध्यम से खतरा आया, तो दाऊद ने अपनी जान बचाने के लिए समझदारी से काम लिया। राजा के रूप में, उसने अंतर्दृष्टि और बुद्धि से इस्राएल का नेतृत्व किया और राष्ट्र को आगे बढ़ाया।

चाहे आप पढ़ाई कर रहे हों, नौकरी कर रहे हों, या कोई व्यवसाय चला रहे हों, प्रभु आपको सफल होने के लिए बुद्धि और समझ प्रदान करेंगे। यदि यीशु आपके साथ हैं, तो आपका ज्ञान, अंतर्दृष्टि और विवेक प्रचुर मात्रा में बढ़ेगा। दाऊद ने हर परिस्थिति में विजय प्राप्त की क्योंकि उसने बुद्धि से काम लिया।

आप महान किए जाएँगे

प्रभु ने यहोशू से कहा, **"आज से मैं सारे इस्राएल के सामने तुझे महान करना शुरू करूँगा ताकि वे जान लें कि मैं मूसा के समान तेरे साथ हूँ।" (यहोशू 3:7)।**

जब हम ईमानदारी और विश्वास के साथ परमेश्वर की आज्ञाओं को सुनते और उनका पालन करते हैं, तो वह हमें अपने वचन के अनुसार महान करता है। महानता, परमेश्वर के प्रति श्रद्धा और भय के साथ किए गए कार्यों को दी जाने वाली अलौकिक स्वीकृति है। यहोशू ने यहोवा का भय माना, उसके वचन का पालन किया और ईमानदारी से काम किया, इसलिए परमेश्वर ने उसे सभी इस्राएलियों के सामने सार्वजनिक रूप से सम्मानित किया।

अगर आप अपनी पढ़ाई, करियर या व्यवसाय में तरक्की पाना चाहते हैं, तो परमेश्वर आपके साथ होने चाहिए। केवल उनकी उपस्थिति ही आपको सच्ची उन्नति दिला सकती है।

हालाँकि गिदोन डरपोक और विश्वास में कमज़ोर था, फिर भी परमेश्वर की उपस्थिति ने उसे एक सामर्थी सेना को परास्त करने में सक्षम बनाया। आज, अगर परमेश्वर आपके साथ है, तो मुसीबत का कोई भी गरजता हुआ शेर आपको हरा नहीं सकता-वह आपको उस पर विजय पाने की सामर्थ देगा! लेकिन सबसे पहले, आपको स्वयं को उसके सामने समर्पित करना होगा।

समस्या चाहे कितनी भी बड़ी क्यों न हो, परमेश्वर से दूर मत हटिए। जब वह आपके साथ होता है, तो सफलता पक्की हो जाती है, बुद्धि आपका मार्गदर्शक बन जाती है, और यहोशू की तरह, आप सम्मान में ऊँचे उठेंगे।

हमारा सबसे अच्छा मित्र

हर व्यक्ति के जीवन में एक ऐसा पवित्र रिश्ता होता है जो खून से भी बढ़कर होता है—एक ऐसा रिश्ता जिसे 'मित्रता' कहते हैं। सच्ची मित्रता उम्र, भाषा, जाति या धर्म की कोई सीमा नहीं जानती। यह आपसी समझ पर आधारित होती है और हमारे जीवन के हर मोड़ पर एक अहम भूमिका निभाती है। सच्चे मित्र सुख-दुख, दोनों में हमारे साथ चलते हैं। जैसे फूलों से गुथी हुई डोरी खुशबू बिखेरती है, वैसे ही एक अच्छे मित्र से बंधा जीवन समृद्धि और सम्मान से भर जाता है।

हम बाइबल में पढ़ते हैं कि जब यीशु कफरनहूम के एक घर में ठहरे हुए थे, तो उनके आगमन के बारे में सुनकर चार मित्र अपने लकवाग्रस्त मित्र को उनके पास ले आए। **"जब वे भीड़ के कारण यीशु के पास नहीं पहुँच सके, तो उन्होंने उसके ऊपर की छत में एक बड़ा छेद बनाया और उस मनुष्य को उस बिस्तर समेत जिस पर वह लेटा था, नीचे कर दिया" (मरकुस 2:4)**। इस दृढ़ निश्चय ने इकट्ठी हुई भीड़ को चकित कर दिया। उनकी चिंता और विश्वास से प्रभावित होकर, यीशु ने उस लकवाग्रस्त व्यक्ति को चंगा कर दिया। ऐसे प्रेमी मित्र

पाना एक दुर्लभ और अनमोल आशीष है। इस व्यक्ति का जीवन चार अच्छे मित्रों की वजह से बदल गया। अगर आपके आस-पास के मित्र सचमुच आपकी भलाई के बारे में चिंतित हैं, तो आपका जीवन भी समृद्ध होगा। इसलिए अपने मित्रों का चुनाव सोच-समझकर करना बेहद ज़रूरी है। मित्र या तो आपको ऊपर उठा सकते हैं या नीचे गिरा सकते हैं—इसे कभी न भूलें।

आज, अनगिनत युवा अपने माता-पिता की बातों की अवहेलना करते हैं और अपने मित्रों की बात मानते हैं—और दिशा

खोकर गलत रास्ते पर चल पड़ते हैं। **"धोखा न खाओ: बुरी संगति अच्छे चरित्र को बिगाड़ देती है" (1 कुरिन्थियों 15:33)**। जब सुलैमान अपने पूर्वजों के साथ सो गया, तो उसका बेटा रहूबियाम राजा बना। उसने पुरनियों की बुद्धिमानी भरी सलाह को ठुकरा दिया और उन युवकों से सलाह ली जिनके साथ वह बड़ा हुआ था और जो अब उसके सामने खड़े थे (1 राजा 12:8)। उसके मूर्खतापूर्ण फैसले के कारण इस्राएल राज्य का बँटवारा हो गया। रहूबियाम का जीवन बर्बाद हो गया, और उसके लिए परमेश्वर की अलौकिक योजना में बाधा उत्पन्न हुई—यह सब इसलिए क्योंकि उसने गुमराह मित्रों का साथ चुना था। अगर आप गलत लोगों को अपने फ़ैसलों को प्रभावित करने देंगे, तो आप उस नियति से चूक सकते हैं जो परमेश्वर ने आपके लिए तैयार किया है।

बेन जॉनसन, जो कभी विश्व एथलेटिक्स के दिग्गज थे, अपनी प्रसिद्धि से इसलिए गिर गए क्योंकि उन्होंने एक गुमराह मित्र की सलाह मान ली और शक्तिवर्धक दवाओं का सेवन किया। नतीजतन, उनके ओलंपिक स्वर्ण पदक छीन लिए गए और उन पर दो साल का प्रतिबंध लगा दिया गया। खेल में वापसी करने के बाद भी, उन्हें फिर से पकड़ा गया और उन पर आजीवन प्रतिबंध लगा दिया गया—जिस सपने के लिए उन्होंने जीवन भर काम किया था, उसे खो दिया। उनके मित्र की गलत सलाह ने उनका भविष्य बर्बाद कर दिया। इसलिए सही मित्र चुनना बेहद ज़रूरी है। उन लोगों के साथ समय बिताएँ जो आपको ऊपर उठाते हैं और मज़बूत करते हैं, और आपका जीवन फलेगा-फूलेगा। कभी-कभी, भरोसेमंद मित्र भी दुश्मन बन सकते हैं। लेकिन यीशु हर परिस्थिति में एक वफादार मित्र बने रहते हैं। क्योंकि उन्होंने हमसे प्रेम किया, उन्होंने हमारे लिए अपना जीवन दे दिया। **"इस से बड़ा प्रेम किसी का नहीं कि कोई अपने मित्रों के लिये अपना प्राण दे" (यूहन्ना 15:13)**।

प्रिय युवा मित्रों, यीशु ही एकमात्र ऐसा अटूट मित्र है जो परीक्षाओं और विजय, दोनों में आपका साथ देता है। सांसारिक मित्र आपको छोड़ सकते हैं, लेकिन यीशु कभी नहीं छोड़ेंगे। इस संसार में आपके चाहे कितने भी मित्र क्यों न हों, केवल यीशु ही आपको बिना शर्त और अनंतकाल तक प्रेम कर सकता है।

विश्व जागृति प्रार्थना भवन

Our Branches

Mumbai (Dharavi)
World Revival Prayer Canter, T/1, Block No.11,
90 Feet Road, Rajiv Gandhi Nagar Dharavi, Mumbai - 400 017
Email: br.dharavi@jesusredeems.org, Ph: +91 8082410410

Mumbai (Malad)
World Revival Prayer Center, Bethel, Plot 305/E,
Mith Chowky Marve Road, Malad(w) Mumbai - 400064
Ph: +91 9664050567

Ranchi
World Revival Prayer Centre, Kadru Sarna Toli,
Near Argora Railway Station, Road no -1, Doranda P.O
Ranchi - 834 002, Jharkand,
Email: br.ranchi@jesusredeems.org, Ph: 9523336010

Chandigarh
World Revival Prayer Centre, SCO 1st Floor, Dhakoli-Kalka Road,
NH-22, Near City Court Zirakpur, Punjab- 160104
Email: br.chandigarh@jesusredeems.org, Ph: 9417726492

Delhi
World Revival Prayer Centre, Plot no 152, Ground floor,
Pratap nagar,opposite harinagar bus depot, New Delhi - 110064
Email: br.delhi@jesusredeems.org, Ph: 011-25616253 / 35580428

Come and Pray

प्रिय युवा सफल व्यक्तियों, आप सभी को मेरा हार्दिक अभिनन्दन!

हम में से कई लोग अक्सर सोचते हैं कि कैसे आसानी से सफलता प्राप्त की जाए या कम समय में सफल व्यक्ति कैसे बनें। लेकिन सफलता कभी भी संयोगवश नहीं होती—इसके लिए कुछ सिद्धांतों का सावधानीपूर्वक पालन करना आवश्यक होता है। अगर हम चार आवश्यक गुणों—एक स्पष्ट दृष्टि, अथक परिश्रम, साहसिक निर्णय और ईमानदारी—को थामे रहें, तो हमारी सफलता के आड़े कोई नहीं आ सकता। आइए मैं आपको एक ऐसे व्यक्ति की प्रेरक यात्रा से परिचित कराता हूँ जिसने अपनी सफलता इन्हीं बुनियादों पर खड़ी की।

माइकल डेल (Micheal Dell)का जन्म 1965 में संयुक्त राज्य अमेरिका में हुआ था। छोटी उम्र से ही, कंप्यूटर के प्रति उनके गहरे आकर्षण ने उन्हें बाकियों से अलग कर दिया। 15 साल की उम्र में, उन्होंने अपने द्वारा खरीदे गए कंप्यूटर को अलग-अलग हिस्सों में खोला और गहरी जिज्ञासा के साथ उसके आंतरिक घटकों का अन्वेषण किया। इससे उनका जुनून और बढ़ गया। 19 साल की उम्र में, जब उनके पास केवल 1,000 डॉलर थे, तब उन्होंने अपने घर के एक छोटे से कमरे से अपनी कंपनी—**पीसी लिमिटेड**(PC'S Limited)—शुरू की।

हालाँकि उनके आस-पास के लोगों ने उन्हें चिकित्सा के क्षेत्र में करियर बनाने के लिए प्रोत्साहित किया, फिर भी माइकल अपने सपने को पूरा करने के लिए दृढ़ थे। उनका व्यवसाय मॉडल सरल लेकिन क्रांतिकारी था: सीधे ग्राहकों को कंप्यूटर बेचना। इस साहसिक दृष्टिकोण ने डेल टेक्नोलॉजीज को वैश्विक सफलता दिलाई।

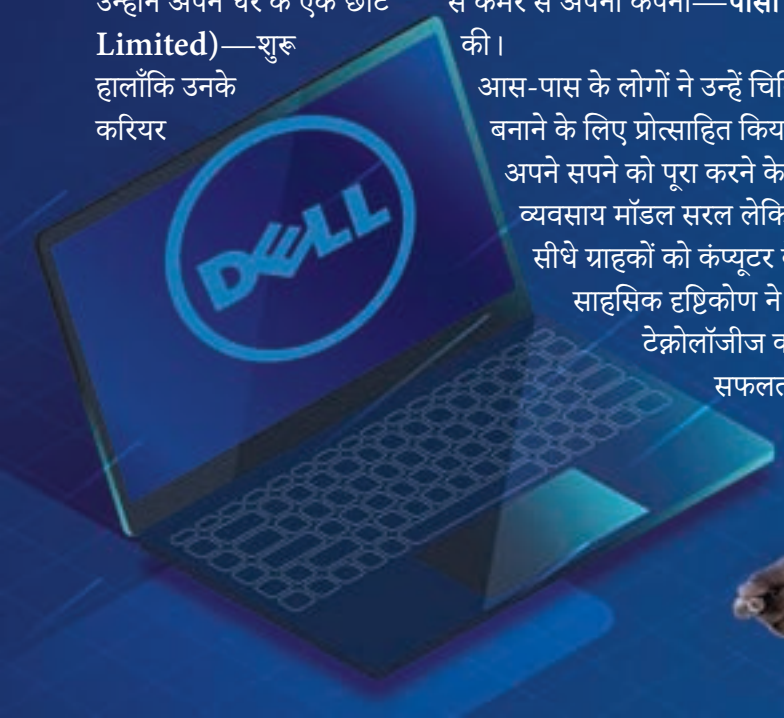

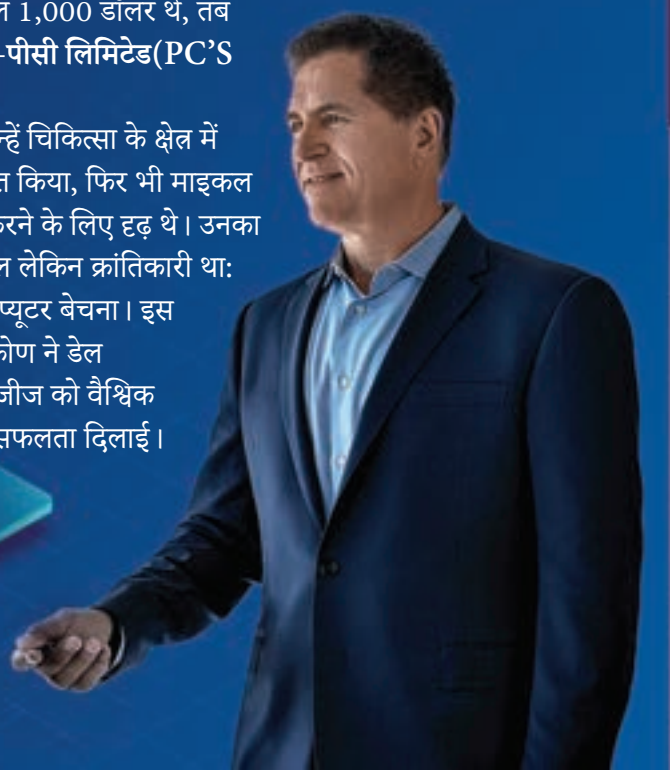

उनके मॉडल को और भी प्रभावशाली बनाने वाली बात थी ग्राहकों की पसंद के अनुसार अनुकूलित कंप्यूटरों की शुरुआत, जो कम कीमत पर उच्च गुणवत्ता के साथ उपलब्ध कराए जाते थे। कदम दर कदम आगे बढ़ते हुए, 1992 में माइकल डेल फॉर्च्यून 500 में शामिल होने वाले सबसे कम उम्र के सीईओ बने।

उद्यमिता के अलावा, उन्होंने समाज के कल्याण के लिए भी उल्लेखनीय इच्छा दिखाई है। **माइकल और सुज़ैन डेल फ़ाउंडेशन**(Micheal & Susan Dell Foundation) के माध्यम से, वे शिक्षा और बच्चों के कल्याण के क्षेत्र में निस्वार्थ भाव से काम करते रहे हैं और कई परोपकारी योजनाओं को लागू करते रहे हैं। कई वर्षों से, वे **फोर्ब्स**(Forbes) की दुनिया के सबसे धनी व्यक्तियों की सूची में लगातार शामिल रहे हैं।

प्रिय पाठकों, माइकल डेल एक ऐसे व्यक्ति हैं जिन्होंने अपनी जिज्ञासा और प्रयास को दुनिया की शीर्ष तकनीकी कंपनियों में से एक में बदल दिया। उनकी यात्रा आज हमारे लिए प्रेरणा का एक शक्तिशाली स्रोत है। उनका जीवन हमें सिखाता है कि हमें जीवन में केवल सपने ही नहीं देखने चाहिए, बल्कि उन सपनों को प्राप्त करने के लिए उत्साह से काम भी करना चाहिए।

हर पांचवें रविवार को हमारे पास युवाओं के लिए एक विशेष कार्यक्रम होता है - "रिवाइवल इग्नाइटर फ़ेलोशिप"। यह जीसस रिडीम्स मिनिस्ट्रीज के यूट्यूब चैनल पर 31/08/2025 और 30/11/2025 को दोपहर 3:00 बजे "लाइव" प्रसारित किया जाएगा।कृपया अधिक जानकारी के लिए नीचे दिए गए नंबर पर हमसे संपर्क करें।

YouTube Jesus Redeems - Hindi
Comforter
www.comfortertv.com

संपर्क संख्या : +919750955548

हेलो मित्रों,

आप सब कैसे हैं? सनसनीखेज खबर नामक इस श्रृंखला के माध्यम से एक बार फिर आपसे मिलकर मुझे बहुत खुशी हो रही है!

इस महीने भी, मैं आपके लिए एक और चौंकाने वाली खबर लेकर आया हूँ।

लेकिन उससे पहले, आइए बाइबल में से कुछ ध्यान करें—कैसे दानिय्येल, शद्रक, मेशक और अबेदनगो, जिन्हें बाबुल में बंदी बना लिया गया था, ने उस देश के इतिहास को नया रूप दिया। ये युवक उस राज्य के प्रभावशाली नेता बने, राजनीतिक ताकत से नहीं, बल्कि हमारे परमेश्वर की सामर्थ और महिमा को साहसपूर्वक प्रकट करके। उन्होंने न केवल लोगों को प्रभावित किया—उन्होंने उस विदेशी राष्ट्र के अधिकारियों को भी जीवित परमेश्वर की ओर मोड़ दिया!

जब राजा नबूकदनेस्सर ने सभी को अपनी स्वर्ण प्रतिमा के आगे झुकने का आदेश दिया, तो शद्रक, मेशक और अबेदनगो ने बिना किसी डर के मना कर दिया और एकमात्र सच्चे परमेश्वर के प्रति अपनी निष्ठा की घोषणा की। क्रोधित होकर, राजा ने उन्हें धधकती भट्टी में डाल दिया। लेकिन इसके बाद जो हुआ वह अद्भुत था—वे आग में बिना किसी नुक्सान के, आनंदपूर्वक चले, और उनके साथ एक चौथा व्यक्ति भी था जिसकी उपस्थिति ने राजा को स्तब्ध कर दिया। इस चमत्कार को देखकर, नबूकदनेस्सर ने हमारे परमेश्वर पर विश्वास किया और उसे अपना परमेश्वर घोषित किया। राजा के उद्धार का कारण क्या था? यह उन चार युवकों का अटूट उत्साह और अटूट विश्वास था। दुख की बात है कि आज, कई युवा विश्वासी दबाव में आकर अपने विश्वास से समझौता कर लेते हैं और परमेश्वर के लिए साहसपूर्वक खड़े होने में असफल हो जाते हैं।

अब, आप सोच रहे होंगे—क्या आज भी ऐसे चमत्कार होते हैं?

जब मैं इस प्रश्न पर विचार कर रहा था, तभी एमहर्स्ट शहर से एक अविश्वसनीय कहानी हमारे पास पहुँची। रेवरेंड पीटर कार्टराइट 70 से भी ज़्यादा वर्षों तक सुसमाचार के एक प्रभावशाली प्रचारक रहे। एक दिन, उन्हें एक मेथोडिस्ट चर्च में भाषण देने के लिए आमंत्रित किया गया। जैसा कि प्रथा है, धर्मोपदेश से पहले एक भजन गाया गया। तभी, उस समय के संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति—एंड्रयू जैक्सन—आए और चुपचाप बैठ गए।

चर्च के पासवान ने जल्दी से कार्टराइट के कान में फुसफुसाया, "राष्ट्रपति यहाँ हैं। कृपया ऐसा कुछ न कहें जिससे उन्हें ठेस पहुँचे।" लेकिन कार्टराइट अविचलित

होकर पश्चाताप का उपदेश देते रहे। उन्होंने ज़रा भी भय नहीं दिखाया। निर्भीकता से उन्होंने घोषणा की, "यदि आप पश्चाताप नहीं करते, तो विनाश निश्चित है। जिस प्रकार एक पश्चाताप न करने वाले आम आदमी का विनाश होता है, उसी प्रकार एक पश्चाताप न करने वाले राष्ट्रपति का भी विनाश होता है।"

चर्च के पासवान काँप गए। लेकिन कार्टराइट अविचलित रहे। और राष्ट्रपति जैक्सन? नाराज़ होने के बजाय, वे गहराई से प्रभावित हुए। सेवा के बाद, उन्होंने उपदेशक से मुलाकात की और उनके द्वारा कहे गए अलौकिक सत्य के लिए उन्हें धन्यवाद दिया। उस मुलाकात ने उनकी मित्रता की शुरुआत को चिह्नित किया। कदम दर कदम, कार्टराइट राष्ट्रपति को मसीह के करीब ले गए। अंततः, जैक्सन एक सच्चे मसीही बन गए और सर्वश्रेष्ठ राष्ट्रपतियों में से एक के रूप में नाम कमाया। जो व्यक्ति मनुष्य से डरता है वह कभी भी एक सामर्थी उपदेशक नहीं हो सकता। कायर प्रभु की सेना में सेवा नहीं कर सकते। "धर्मी लोग सिंह के समान निडर होते हैं" (नीतिवचन 28:1)।

क्या यह चमत्कार केवल तभी होता है जब अंधे देखते हैं, बीमार ठीक होते हैं, या ज़रूरतें पूरी होती हैं? नहीं! किसी आत्मा का बचना भी एक चमत्कार है। और जब कोई प्रभावशाली व्यक्ति उद्धार पाता है, तो यह और भी बड़ा आश्चर्य होता है।

परमेश्वर आपको, जो इसे पढ़ रहे हैं, राजाओं और अधिकारियों के सामने खड़े होने के लिए तैयार कर रहे हैं। आपके माध्यम से, वह उनके उद्धार का आदेश देंगे। लेकिन ऐसा होने के लिए, आपको उस डर पर विजय प्राप्त करनी होगी जो आपको रोकता है। कार्टराइट के निडर विश्वास ने ही एक सच्चे मसीही नेता के उदय का मार्ग प्रशस्त किया। परमेश्वरीय नेताओं का उदय आप जैसे युवा विश्वासियों के हाथों में है।

तो मित्रों... क्या आप देश को बदलने के लिए तैयार हैं?

(जारी रहेगा...)

Revival IGNITERS Monthly Fellowship

इग्नाइटर्स यूथ फ़ेलोशिप एक जगह है जहां युवा अपनी आध्यात्मिकता को प्रज्वलित करते हैं जीवन की गहन सच्चाइयों की खोज करें बाइबल, और प्रार्थना करने में शक्ति पाएँ एक समूह के रूप में देश।आपका स्वागत है इस फ़ेलोशिप में शामिल होने और बढ़ने के लिए मज़बूत। चलो भी! अपने आप को मजबूत करो,और दूसरों को मजबूत करने के लिए तैयार हो जाइये !

हर पहले रविवार
Mumbai – Dharavi
Timing: 5.00 PM- 7.30 PM
World Revival Prayer Centre
2nd Floor, Above Balakrishna
Farsan Mart, Opp. Apna Restaurant,
Near Kamarajar School,
90 Feet Road,
9004882470

हर दुसरे रविवार
THANE
Timing: 5PM - 7:30PM
R.P. Mangala High School
(Near Railway Station),
Room No.10,
Opp. Bank of Maharashtra,
Thane (East)
9004882470

हर चौथे रविवार
Mumbai-Malad
Timing: 4.00 PM – 6.00 PM
Bethel Ground Floor
305/E, Mith Chauky,
Marve Road,
Malad (W)
9664050567 | 9619996976

प्रार्थना मार्गदर्शिका

अगस्त 2025

1 आइए हम भारत भर में शराब की लत के गुलाम लगभग 16 करोड़ लोगों के उद्धार के लिए प्रार्थना करें—जिनमें से 7.5% महिलाएँ हैं।

2 आइए हम उन स्कूली और कॉलेज के छात्रों की मुक्ति के लिए प्रार्थना करें जिनका जीवन नशे की लत से बर्बाद हो रहा है।

3 आइए हम उन युवाओं के लिए प्रार्थना करें जिन्होंने मादक द्रव्यों के सेवन के कारण अपनी शिक्षा, नौकरी और भविष्य खो दिया है, ताकि वे पश्चाताप करें और वापस लौट आएँ।

4 आइए हम आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक और तेलंगाना जैसे राज्यों में शराबबंदी के पूर्ण कार्यान्वयन के लिए प्रार्थना करें, जो शराब की बिक्री से महत्वपूर्ण राजस्व अर्जित करते हैं।

5 आइए हम देश की 45% से अधिक शराब की बिक्री के लिए ज़िम्मेदार राज्यों के मुख्यमंत्रियों के हृदय में परमेश्वरीय परिवर्तन के लिए प्रार्थना करें।

6 आइए हम उन लोगों के पश्चाताप के लिए प्रार्थना करें जो अपनी गरीबी और बेरोजगारी के कारण शराब खरीदने के लिए चोरी और डकैती का सहारा लेते हैं।

7 आइए प्रार्थना करें कि हमारा देश उस त्रासदी से मुक्त हो जहाँ शराब के सेवन के कारण हर साल 30 लाख लोग मरते हैं—हर मिनट 6 लोग।

8 आइए, शराब के सेवन से होने वाली यकृत रोग, मुख कैंसर, अग्नाशय संबंधी विकार, तपेदिक और अन्य बीमारियों से पीड़ित लगभग 1 करोड़ लोगों के स्वास्थ्य और मुक्ति के लिए प्रार्थना करें।

9 भारत में, हर 8 मिनट में एक महिला गर्भाशय ग्रीवा या मुख कैंसर के कारण मर जाती है। आइए, इन बीमारियों से हर साल मरने वाली 2,80,000 महिलाओं की मृत्यु को रोकने के लिए परमेश्वरीय हस्तक्षेप की प्रार्थना करें।

10 आइए, कैंसर से जूझ रहे और इलाज करा रहे सभी लोगों के पूर्ण स्वास्थ्य लाभ के लिए प्रार्थना करें।

11 आइए, कैंसर मुक्त पीढ़ी के निर्माण के लिए प्रार्थना करें और यह सुनिश्चित करें कि सरकारें बिना किसी कमी के आवश्यक दवाओं की उपलब्धता सुनिश्चित करें।

12 विश्व स्तर पर, गरीबी में रहने वाले लोगों की संख्या 71.3 करोड़ (11 वर्ष पूर्व) से बढ़कर 83.8 करोड़ हो गई है। आइए, गरीबी के इस ज्वार को उलटने के लिए प्रार्थना करें।

13 गुजरात में, हर तीन में से एक परिवार—31 लाख से ज़्यादा परिवार—गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करते हैं। आइए, राज्य की गरीबी की स्थिति में बदलाव के लिए प्रार्थना करें।

14 आइए, तमिलनाडु में सरकारी नौकरियों की प्रतीक्षा कर रहे 35.35 लाख लोगों के लिए उपयुक्त रोज़गार उपलब्ध कराने हेतु सरकार से प्रार्थना करें।

15 आइए, सरकारी नौकरियों के लिए आवेदन करने वाले 18 से 25 वर्ष की आयु के 7,58,639 युवाओं के लिए रोज़गार के अवसरों हेतु प्रार्थना करें।

16 भारत में दुनिया में सबसे ज़्यादा स्नातक हैं—10 करोड़ से ज़्यादा—लेकिन रोज़गार सृजन के मामले में यह निचले पायदान पर है। आइए, इस स्थिति में सुधार के लिए प्रार्थना करें।

17 आइए, सरकार से सार्वजनिक पदों पर रिक्तियों को भरने के लिए प्रार्थना करें ताकि बेरोज़गार युवाओं को काम मिल सके और उनका भविष्य उज्ज्वल हो।

18 आइए, अहमदाबाद से लंदन जाते समय एयर इंडिया के विमान हादसे में मारे गए 242 यात्रियों के परिवारों की सांत्वना और उनके स्वास्थ्य लाभ के लिए प्रार्थना करें।

19 आइए प्रार्थना करें कि सभी हवाई यात्राएँ दुर्घटनाओं और आपदाओं से सुरक्षित रहें।

20 आइए प्रार्थना करें कि पायलट, फ्लाइट अटेंडेंट और विमानन उद्योग से जुड़े सभी लोग यीशु को जानें और स्वीकार करें।

21 आइए प्रार्थना करें कि भारत के 34 अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डों की सुरक्षा, विमानों के उचित रखरखाव और इससे जुड़े सभी लोगों को परमेश्वरीय ज्ञान मिले।

22 2024 में, दुनिया भर में 1,374 भूकंप आए, जिससे कई देश हिल गए। आइए प्रार्थना करें कि भविष्य में ऐसी आपदाओं की रोकथाम हो।

23 पिछले वर्षों में, भूकंपों ने लगभग 550 लोगों की जान ली है और व्यापक क्षति पहुँचाई है। आइए प्रार्थना करें कि ऐसी त्रासदियाँ फिर कभी न हों।

24 आइए प्रार्थना करें कि ग्लोबल वार्मिंग के कारण होने वाली प्राकृतिक आपदाएँ रुकें और हर जगह मानव जीवन सुरक्षित रहे।

25 आइए प्रार्थना करें कि दुनिया भर में गंभीर भूख से पीड़ित 34 करोड़ लोगों के लिए प्रार्थना करें—ताकि उन्हें भोजन मिल सके।

26 आइए हम खाद्यान्न की कमी के कारण 18 देशों से विस्थापित हुए 96 करोड़ लोगों के लिए प्रार्थना करें—ताकि वे अपने नए देशों में बस सकें और शांतिपूर्वक रह सकें।

27 आइए हम प्रार्थना करें कि जलवायु परिवर्तन, जो कृषि के लिए ख़तरा है और खाद्यान्न की कमी का कारण बनता है, पर रोक लगे।

28 आइए हम प्रार्थना करें कि सरकारी खाद्य सहायता भूख से मर रहे लोगों तक पहुँचे और भूख से होने वाली मौतों में भारी कमी आए।

29 आइए हम प्रार्थना करें कि पवित्र आत्मा सभी प्राणियों पर उंडेला जाए।

30 आइए हम दुनिया भर की कलीसियाओं में एक सामर्थी पुनर्जागृति के लिए प्रार्थना करें।

31 आइए हम कलीसिया के विरुद्ध उठने वाली हर शैतानी ताकतों के विनाश और सभी कलीसियाओं की अलौकिक सुरक्षा के लिए प्रार्थना करें।

पुनर्जागृति के बीज

पिछले महीने, हमने देखा कि कैसे मैरी स्लेसर ने, प्रभु के प्रति अपने गहरे प्रेम से प्रेरित होकर, अफ्रीका में अनगिनत चुनौतियों का साहसपूर्वक सामना किया और कई लोगों को मसीह की ओर अग्रसर किया। इस महीने, आइए एक और मिशनरी के जीवन पर नज़र डालें, जिन्होंने माता-पिता के विरोध का सामना करते हुए, केवल 70 डॉलर लेकर यात्रा शुरू की और आज भी निष्ठापूर्वक परमेश्वर की सेवा कर रहे हैं।

ब्रूस ओल्सन

एक युवा बालक के रूप में, **ब्रूस ओल्सन** ने मसीह को अपने जीवन में स्वीकार किया। 15 वर्ष की आयु में, उन्होंने दक्षिण अमेरिका में उन लोगों के बारे में जाना जो अभी तक जीवित नहीं हैं। उनकी आध्यात्मिक स्थिति से अभिभूत होकर, उन्होंने उनके लिए प्रार्थना करना शुरू कर दिया और उनके बारे में जितनी भी जानकारी हो सकती थी, इकट्ठा करना शुरू कर दिया। 1961 में, 19 वर्ष की आयु में, परमेश्वर के बुलाहट के पक्के सबूत के साथ और अपने माता-पिता के कड़े विरोध के बावजूद, ब्रूस एक मिशनरी के रूप में वेनेज़ुएला शहर के लिए रवाना हुए—उनके पास 70 डॉलर से ज़्यादा कुछ नहीं था। उनके पैसे जल्द ही खत्म हो गए, जिससे उन्हें पूरी तरह परमेश्वर के प्रावधान पर निर्भर रहना पड़ा। इस दौरान, वे स्पेनिश भाषा में भी पारंगत हो गए।

जब उन्हें मोतीलोन जनजाति के बारे में पता चला—एक ऐसा आदिवासी समूह जो अपने अत्यधिक अलगाव और बाहरी लोगों के प्रति शत्रुता के लिए जाना जाता है—तो उनका मन चिंता से भारी हो गया। लगभग इसी समय, सरकार ने सभी विदेशियों को तुरंत वेनेज़ुएला छोड़ने का आदेश जारी किया। आगे क्या करें, इस बारे में अनिश्चित ब्रूस को अपने निवास स्थान पर किसी व्यक्ति से मदद मिली। इस व्यक्ति ने ब्रूस के दक्षिण अमेरिका में रहने की व्यवस्था की और आदिवासियों के बीच काम शुरू करने में उनकी मदद की।

एक दिन, एक स्थानीय व्यक्ति के मार्गदर्शन में, ब्रूस मोतीलोन जनजाति की तलाश में घने जंगलों से होते हुए एक लंबी यात्रा पर निकल पड़े। कई दिनों बाद, जब वे जनजाति के क्षेत्र की सीमा पर पहुँचे, तो मार्गदर्शक ने

इशारा करके कहा, "यहीं मोतीलोन लोग रहते हैं," और अचानक गायब हो गया। जैसे ही ब्रूस आगे बढ़े, एक छह फुट लंबा भाला हवा में चला और उनकी जांघ में जा लगा। वह बेहोश होकर गिर पड़े। जब उनकी आँख खुली, तो उन्होंने स्वयं को भालों से लैस आदमियों से घिरा पाया। चूँकि जनजाति का मुखिया मौजूद नहीं था, इसलिए उन्हें तुरंत मारने के बजाय एक घर में कैद कर दिया गया। ब्रूस दो दिन तक वहीं रहे, जब तक कि कुछ शिकारियों ने उन्हें बचा नहीं लिया और उन्हें अस्पताल ले गए।

दो हफ़्तों के भीतर, वह पूरी तरह ठीक हो गए। अपने सामने आए ख़तरे से विचलित हुए बिना, ब्रूस एक बार फिर मोतीलोन लोगों को यीशु मसीह का संदेश सुनाने की तीव्र इच्छा के साथ निकल पड़े। जैसे ही वह उनके गाँव के पास पहुँचे, उन्होंने देखा कि पाँच युवा योद्धा तीरों से लैस होकर एक झाड़ी के पीछे छिपे हुए हैं। ओल्सन थोड़ा हिचकिचाऐ, लेकिन वे हमला करने के बजाय उसे आदिवासी सरदार के पास ले गए। रास्ते में, ब्रूस पीलिया के कारण बेहोश हो गए। फिर भी, वे युवक उसे सरदार के पास ले गए। यह सोचकर कि वह वैसे भी मर जाएगा, उन्होंने उसे अपनी विशाल सामुदायिक झोपड़ी में लिटा दिया और उनको उनके हाल पर छोड़ देने का फैसला किया। उस रात, जब सब सो रहे थे, ब्रूस धीरे-धीरे बाहर निकले और खुले मैदान में गिर पड़े।

एक पायलट ने खुले में एक व्यक्ति का शव निश्चल पड़ा देखा और उसे बचाने के लिए एक हेलीकॉप्टर उतारा। दूर से देख रहे आदिवासी लोगों को लगा कि "आसमान से कोई विशाल चील" उसे उठाकर ले गया है। अगले ही हफ़्ते, ब्रूस पूरी तरह ठीक होकर उसी गाँव में लौट आया, और आँखों के संक्रमण से पीड़ित ग्रामीणों का इलाज करने लगा। जब वे ठीक हो गए, तो गाँव के सरदार और लोगों ने उसे अपना मित्र बना लिया। उनके प्रति उनका आदर बढ़ता गया।

मोतीलोन के लोग "डिबोडिबो" नामक एक देवता की पूजा करते थे, जिनके बारे में उनकी मान्यता थी कि वे तारों से परे एक भव्य झोपड़ी में रहते हैं। इसी विश्वास को आधार बनाकर, ओल्सन ने समझाया कि डिबोडिबो एक प्रेमपूर्ण ईश्वर हैं जो मोतीलोन के लोगों के साथ रहना चाहते हैं। उन्होंने उन्हें बताया कि इसी परमेश्वर ने अपने पुत्र, यीशु मसीह को इस संसार में भेजा, जो उनके पापों के लिए मर गए और फिर से जी उठे। ओल्सन ने बताया कि जो कोई भी अपने पापों को स्वीकार करेगा और यीशु मसीह को स्वीकार करेगा, उसका दिबोडिबो के महान घराने में स्वागत किया जाएगा। धीरे-धीरे, लोगों के हृदय प्रभु की ओर मुड़ने लगे।

यह परिवर्तन तत्काल नहीं हुआ। ओल्सन ने धैर्यपूर्वक उनके पापपूर्ण रीति रिवाजों का सामना किया और उन्हें दिखाया कि परमेश्वर को क्या नापसंद है। समय के साथ, लोगों ने उनकी बातों पर ध्यान देना शुरू कर दिया। जिस युवक ने सबसे पहले ओल्सन पर तीर चलाया था—कोरैरा—वही सबसे पहले पश्चाताप करने और यीशु मसीह को स्वीकार करने वाला व्यक्ति था। उसके बाद, कई मोतीलोन के लोग प्रभु की ओर मुड़े। **28 वर्षों की सेवा के दौरान, ब्रूस ओल्सन ने मोतीलोन लोगों के बीच 10 चिकित्सा केंद्र, 15 कृषि विकास केंद्र, 8 व्यापारिक बाज़ार, 12 स्कूल और कई चर्च स्थापित किए।**

प्रिय युवा पाठकों, तीरों से छलनी होने, बीमारियों से ग्रस्त होने और लगातार अपनी जान जोखिम में डालने के बावजूद, ब्रूस ओल्सन ने निडरता से मोतीलोन जनजाति तक मसीह का प्रेम पहुँचाया और उन्हें उद्धार की ओर अग्रसर किया। आज, 83 वर्ष की आयु में, वह न केवल बारी लोगों के बीच, बल्कि कोलंबिया के जंगलों में अनगिनत अन्य मूल समुदायों के बीच भी सेवा कर रहे हैं। परमेश्वर पर उनके अटूट विश्वास और उनके बुलाहट के प्रति आज्ञाकारिता ने उन्हें परमेश्वर के राज्य में एक अग्रणी बनाया। यदि आपका हृदय समर्पण का है, तो परमेश्वर आपका भी सामर्थी रूप से उपयोग कर सकते हैं।

मसीह के लिए हृदय की ज्वाला

जुडाह बेनीहिन

जब हम होसुर में भाई जुडाह बेनीहिन के घर पहुँचे, तो सुबह काफ़ी हलचल भरी थी। वे गहरी प्रार्थना में लीन थे और एक करोड़ आत्माओं के उद्धार की तैयारी कर रहे थे। हालाँकि उन्हें पता नहीं था कि हम कौन हैं, फिर भी उन्होंने हमारा हार्दिक स्वागत किया। जैसे ही हमने अपना परिचय दिया और कॉफ़ी पीने बैठे, एक रहस्यमयी माहौल छा गया। इसके बाद एक अविश्वसनीय बातचीत हुई—और हम इसे आपके सामने प्रस्तुत करते हैं, वैसे ही जैसे यह घटित हुई।

हेलो भाई! क्या आप हमें अपनी पारिवारिक पृष्ठभूमि के बारे में कुछ बता सकते हैं?

मेरा जन्म एक ऐसे परिवार में हुआ था जो यीशु मसीह को नहीं जानता था। जब मेरे पिता मेरी दादी के गर्भ में थे, तब उनके घर में साँपों और उनके घोंसलों का आतंक था। उनके जन्म के बाद, जिस पालने में वे सोते थे, उसके चारों ओर साँप लिपटे रहते थे। इसी से उनका नाम नागराज पड़ा। मेरी माँ अंजिमा हनुमान की परम भक्त थीं। मेरी बड़ी बहन का नाम लक्ष्मी है, छोटी का नाम सरस्वती है, मेरे भाई का नाम अय्यप्पन है - और मेरा नाम मुरुगन रखा गया। हर साल, हमारा परिवार आग पर चलना, जीभ छिदवाना, नंगे पैर पहाड़ियों पर चढ़ना और होसुर से पलानी तक कावड़ी ले जाना जैसे अनुष्ठान करता था। हमारे माता-पिता ने हमें अपने देवताओं के प्रति अत्यधिक भक्तिभाव के साथ पाला।

हमें अपनी स्कूली शिक्षा और किशोरावस्था के बारे में बताइए।

मैं बचपन से एक मसीही स्कूल में पढ़ता था। लेकिन छठी कक्षा तक पहुँचते-पहुँचते मैं बुरी संगत में पड़ गया। मैंने धूम्रपान और शराब पीना शुरू कर दिया। एक दिन, कब्रिस्तान में शराब पीते समय, मुझ पर एक दुष्ट आत्मा का साया पड़ गया। उसी क्षण से, वह आत्मा मुझसे दिन-रात बातें करने लगी। रात में, मैं अपने बिस्तर के पास एक साँप को कुंडली मारे हुए देखता, मुझसे ऐसे बात करता और व्यवहार करता जैसे वह जीवित हो। मैंने इसे अपनी आँखों से साफ़ देखा और अपने कानों से सुना। मैं, जो कभी अपनी कक्षा में अव्वल आता था, बुरी तरह फेल होने लगा। उस

आत्मा ने मुझसे कहा, "मैं तुम्हें पागल कर दूँगी।" स्कूल जाते हुए, मैं अचानक सूरज, पेड़ों और पौधों से बातें करने लगता। मैं स्कूल में हिंसक व्यवहार करता, दूसरों को मारता, गालियाँ देता, यहाँ तक कि शिक्षकों पर भी हमला करता। आखिरकार, शिक्षक ने मुझे खिड़की से बाँध दिया।

यह सोचकर कि मेरे पास जीने के लिए बहुत कम समय बचा है, मैंने मौज मस्ती से जीने का गलत तरीका अपना लिया—शराब पीना, धूम्रपान करना, ड्रग्स लेना और एक अपवित्र जीवन जीना। मैंने अपने शरीर पर जगह-जगह टैटू बनवाए, रात में सड़कों पर घूमता, ड्रग्स खरीदने के लिए पैसे कमाने के लिए गाड़ियाँ चुराता, और घर से ज़्यादा पुलिस थानों में समय बिताता। लगभग एक साल तक, मैं घर गए बिना ही पागलों की तरह घूमता रहा।

यह सुनने में डरावना लगता है! क्या आपकी किशोरावस्था में कुछ बदला? क्या आपने उस पापपूर्ण जीवन को पीछे छोड़ दिया?

जब मैं दसवीं कक्षा में था, तब मैं वॉलीबॉल खेलने के लिए स्कूल जल्दी जाता था। हमारे स्कूल में प्रतिदिन मसीही सभाएँ होती थीं। एक भाई रोज़ यीशु के बारे में बात करते थे और हमें उन्हें स्वीकार करने के लिए प्रेरित करते थे। मैं उनसे कहता था, "कृपया यीशु के बारे में बात न करें—कुछ और कहें।" फिर भी, वह मेरे लिए पफ और जूस खरीदता रहा, बिना फिर कभी यीशु का ज़िक्र किए। लगभग तीन-चार महीनों तक, वह नाश्ते ही हमारे लिए सुसमाचार था।

एक दिन, उसने मुझे एक सभा में बुलाया। मैंने उससे कहा, "मैं कहीं भी आ जाऊँगा, बस मुझे किसी मसीही सभा में मत ले जाना।" लेकिन 26 मई, 2012 को (मैं 16 साल का था), वह मुझे तीन दिन के युवा शिविर में ले गया। उस शाम, उपदेशक ने घोषणा की, "मैं यीशु को आमने-सामने देख रहा हूँ। तलवार थाम लो!" मैं दंग रह गया। मैंने कई देवताओं को मालाएँ चढ़ाई थीं, आग पर चला था, फिर भी किसी ने मुझसे कभी बात नहीं की थी। "यह कौन है जो अपने परमेश्वर से बात करता है?" मैं सोच रहा था। मैंने अपने आस-पास के लोगों से पूछा, "क्या यीशु ने सचमुच उससे बात की थी?" और उन सभी ने निडरता से गवाही दी, "हाँ, यीशु उद्धारकर्ता हैं। उन्होंने हमारे लिए अपनी जान दी और अपने लोगों से बात करते हैं।"

क्या यह सवाल आपके मन में घर कर गया? क्या आपने यीशु को स्वीकार किया?

हाँ, मैं एक अभिलाषा से भर गया था - "मैं चाहता हूँ कि मेरे ईश्वर भी मुझसे बात करें।" मैं उस स्कूल भवन की पाँचवीं मंज़िल पर चढ़ गया जहाँ शिविर लगा था और अपने देवता को पुकारने लगा। लेकिन जिस देवता की मैं पूजा करता था,

उसकी जगह वही दुष्ट साँप प्रकट हुआ जिससे मैं पहले डरता था। मुझे डर ने जकड़ लिया। दुष्टात्मा ने कहा, "तुम्हारी जान लेने का दिन आ गया है।"

अचानक, एक तेज़ दर्द मेरे हृदय में सुई की तरह चुभ गया। मेरी छाती कुचली हुई सी लगी। मुझे एहसास हुआ कि मेरे पास जीने के लिए बस दो मिनट बचे हैं। मैंने उन सभी देवताओं को पुकारा जिनकी मैंने पूजा की थी - किसी ने जवाब नहीं दिया। निराशा में, मैं अपनी जान देने के लिए पाँचवीं मंज़िल से कूदने ही वाला था।

उसी क्षण, आसमान फट गया, और एक तेज़ रोशनी नीचे चमक उठी। उस रोशनी से एक गरजती हुई आवाज़ आई: **"मैं सच्चा परमेश्वर हूँ। मैंने तुम्हारे लिए क्रूस पर प्राण त्यागे और तुम्हें छुड़ाया। मैं तुम्हारा उद्धारकर्ता हूँ।"** इस आवाज़ ने मुझे ज़मीन पर गिरा दिया। मैं तीन घंटे तक उठ नहीं सका। फिर मैंने फिर से आवाज़ सुनी:

"मैंने क्रूस उठाया और तुम्हें बचाने के लिए अपनी जान दे दी। मै चाहता हूँ की तुम मेरी सेवकाई करो।"

मैंने ऊपर देखा और कहा, **"प्रभु, अगर आपने सचमुच अपना जीवन मेरे लिए दिया है, तो मैं अपना बाकी जीवन आपके लिए ही जीऊँगा।"**

उस दिन, मैंने अपना जीवन परमेश्वर को समर्पित कर दिया।

वाह! जिस परमेश्वर को आप नहीं जानते थे, वह आया और आपसे बात की। क्या आपके परिवार ने आपके इस फैसले को स्वीकार किया?

27 मई, 2012 को, यीशु ने मुझे खोजा और मुझे एक नई सृष्टि बनाया। जब मैंने अपनी माँ को बताया, **"यीशु ने मुझसे बात की,"** तो उन्होंने मुझे पीटा और मेरा मज़ाक उड़ाया। उन्होंने ज़ोर देकर कहा, "किसी ने तुम्हारा धर्म परिवर्तन कर दिया है। उस ईश्वर को भूल जाओ और हमारे ईश्वर की पूजा करो।"

मेरे घर में ऐसी कोई जगह नहीं थी जहाँ मुझे पीटा नहीं गया। मैं चर्च जाना चाहता था, लेकिन वे बाथरूम के दरवाज़े बंद कर देते थे ताकि मैं प्रार्थना सभा में जाने के लिए नहा भी न सकूँ। मैं दरवाज़े तोड़कर भी जाता था। जब मैं वापस आता, तो मेरे माता-पिता लाठियाँ लिए इंतज़ार कर रहे होते थे और मुझे अपमानित करने सड़कों पर घु माते थे।

इस अपमान के बावजूद, 16 साल की उम्र में, मैं उस परमेश्वर के लिए जीने का दृढ़ निश्चय कर चुका था जिसने मुझे जीवन दिया है। रविवार को मुझे खाना नहीं दिया जाता था और आधी रात तक बाहर खड़ा रहने दिया जाता था, उसके बाद ही अंदर जाने दिया जाता था। मैं बाइबल पढ़ना चाहता था, लेकिन अगर मैं उसे खोलता, तो मेरी माँ उसे फाड़ देतीं या आग में फेंक देतीं। इसलिए मैं सबके सोने का इंतज़ार करता, फिर स्वयं को कंबल से ढककर टॉर्च की रोशनी में उसे पढ़ता।

सिर्फ़ तीन दिनों में, मैंने पूरी बाइबल पढ़ ली—परमेश्वर के वचन की तीव्र भूख के कारण। मुझे प्रार्थना करना, बाइबल को ठीक से पढ़ना या भेंट चढ़ाना नहीं आता था। लेकिन भेंट चढ़ाते समय, मैं अपना हाथ डिब्बे में डालकर कहता, **"प्रभु, मैं स्वयं को आपको समर्पित करता हूँ।"**

यह सब सुनकर मन टूट जाता है। क्या तुम्हारे संघर्ष यहीं खत्म हो गए?

बिल्कुल नहीं। जब मैं 17 वर्ष का हुआ, तो मेरी माँ ने मुझे हर साल की तरह फिर से एक रस्म (पवित्र माला पहनना) करने के लिए मजबूर किया। लेकिन मैंने यीशु मसीह को स्वीकार कर लिया था। मैं ऐसा कैसे कर सकता था? मैं अडिग रहा। मेरे मामा और मेरे परिवार ने मुझे बेरहमी से पीटा, इस बात की परवाह किए बिना कि मैं अभी भी एक किशोर हूँ।

"अगर हमें पता होता कि तुम्हारा ऐसा हाल होगा, तो हम तुम्हें बचपन में ही मार देते," उन्होंने कहा।

"अगर तुम हमेशा की तरह रस्म निभाओगे, तो तुम रह सकते हो। अगर नहीं, तो अभी इस घर से निकल जाओ।"

मुझे बाहर निकाल दिया गया, कपड़े फाड़ दिए गए। 17 साल की उम्र में, मेरे पास कोई आश्रय नहीं था। मैं बस स्टैंड,

रेलवे स्टेशनों, प्लेटफार्मों पर सोता था। गुज़ारा करने के लिए, मैंने होसुर में ₹200 में सार्वजनिक शौचालय और ₹100 में सेप्टिक टैंक साफ़ किए। लोग अपने आँगन से खरपतवार निकालने के लिए ₹50 या ₹20 देते थे। इसी तरह मैंने अपनी पढ़ाई का खर्च उठाया।

शौचालय साफ़ करने के बाद, मैं स्कूल जाता। एक-दो दिन के लिए नहीं, बल्कि पूरे छह साल। इसी तरह मैंने स्कूल और कॉलेज की पढ़ाई पूरी की। मेरे पास सोने की जगह नहीं थी, मेरे पास खाने के लिए कुछ नहीं था। कभी-कभी भिखारी अपना खाना मेरे साथ बाँट लेते थे। एक क्रिसमस पर, मुझे मिक्सचर का एक पैकेट मिला। अगले 28 दिनों तक यही मेरा खाना था। मैं रोज़ थोड़ा-थोड़ा खाता और पानी पीता ताकि वह टिक सके।

स्कूल और कॉलेज की पढ़ाई पूरी करने के बाद, मैं जंगल में जाता, घुटने टेकता और परमेश्वर से प्रार्थना करता:

"हे प्रभु, आज दुनिया मुझे भिखारी, शौचालय साफ़ करने वाला, अनाथ कह सकती है। लेकिन एक दिन, मैं आपके वचन को उठाऊँगा और दुनिया के कोने-कोने तक यह घोषणा करूँगा कि 'यीशु ही प्रभु हैं'!"

छह साल तक मैंने यही प्रार्थना की, अपने हृदय की गहराइयों से गाते हुए:

"मैं सिर्फ़ आपके लिए जीता हूँ, प्रभु, क्योंकि आप ही मेरा प्यार हैं।"

इतनी सारी परीक्षाओं के बाद, क्या आपको कॉलेज के बाद काम मिला?

परमेश्वर के अनुग्रह से, मैंने मैकेनिकल इंजीनियरिंग की डिग्री पूरी की और अच्छी तनख्वाह वाली एक अच्छी नौकरी पा ली। मेरे परिवार ने मुझे फिर से स्वीकार कर लिया। मेरी कमाई ने उन्हें खुश कर दिया। लेकिन फिर मेरे उद्धारकर्ता मेरे पास फिर आए और कहा: "मैंने तुम्हें सिर्फ़ अपने परिवार के लिए जीने के लिए नहीं बुलाया है। मैं तुम्हें इसके लिए नहीं जानता। मुझे तुम्हारी सेवा चाहिए।"

मैंने अपनी नौकरी छोड़ दी और अपने कमरे में चिल्लाया:

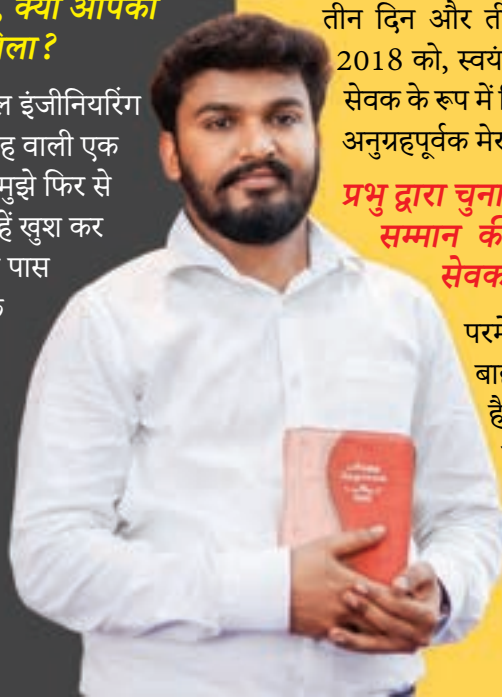

"प्रभु, मैं कभी बाइबल कॉलेज नहीं गया, कोई मेरे लिए प्रार्थना नहीं करता, मुझे प्रचार करना, आराधना करना या सेवा करना नहीं आता। लेकिन आपने मुझे चुना है - आप मुझसे क्या करवाना चाहते हैं?"

और फिर आपकी सेवा शुरू हुई? आपका आध्यात्मिक जीवन कैसे विकसित हुआ?

मैंने एक निर्णय लिया: "प्रभु, जब तक मैं आपको न देख लूँ, मैं न खाऊँगा, न बोलूँगा, न किसी को देखूँगा। अगर मैं कुछ देखूँ, तो वह आप ही हों। अगर मैं कुछ सुनूँ, तो वह आपकी आवाज़ हो।"

मैं अपने कमरे में प्रार्थना करने लगा। एक दिन बीत गया। तीन दिन। पाँच। इक्कीस। फिर चालीस। फिर भी यीशु का कोई निशान नहीं। आखिरकार, 97 दिनों तक न खाने और न किसी से मिलने के बाद, एक रात, उस बंद कमरे में, सर्वशक्तिमान परमेश्वर एक चमकते हुए प्रकाश के साथ प्रकट हुए। प्रकाश से एक आवाज़ आई, **"मुझसे माँग लो जो तुम्हारी इच्छा है।"**

जैसे ही मैं सामर्थ और आध्यात्मिक वरदान माँगने ही वाला था, पवित्र आत्मा ने मुझे रोक दिया। उस दिन, मैंने सीखा कि आत्मा हमें सही समय पर वह देती है जिसकी हमें ज़रूरत होती है। उन्होंने फुसफुसाते हुए कहा, "वरदान मत माँगो - आत्माएँ माँगो।" मैंने उस प्रकाश की ओर देखा और कहा, "मुझे सामर्थ या वरदान नहीं चाहिए - मरने से पहले, मुझे एक करोड़ आत्माएँ चाहिए।" 97वें दिन से, प्रभु ने मुझसे तीन दिन और तीन रात बात की। 21 अक्टूबर, 2018 को, स्वयं परमेश्वर ने मुझे एक पूर्णकालिक सेवक के रूप में नियुक्त किया। उस दिन से, उन्होंने अनुग्रहपूर्वक मेरा मार्गदर्शन किया है।

प्रभु द्वारा चुना और भेजा जाना, यह कितने सम्मान की बात है! अब आप किन सेवकाइयों में शामिल हैं?

परमेश्वर ने अब मुझे उसी दुष्टात्मा को बाहर निकालने का अधिकार दिया है जिसने मुझे आत्महत्या के लिए प्रेरित करने की कोशिश की थी। वह पूरे देश में कलीसियाओं को पुनर्जीवित और मज़बूत करने के लिए मेरा इस्तेमाल करते हैं। 21

अक्टूबर, 2018 को, परमेश्वर ने मुझसे एक वादा किया: **"मैं तुम्हें डिंडीगुल दूँगा। राजा तुम्हारे प्रकाश में आएंगे।"** हालाँकि इस क्षेत्र में सेवकाई के विरुद्ध कई शत्रु और बाधाएँ उठीं, फिर भी परमेश्वर ने मुझे एक कलीसिया स्थापित करने में मदद की। प्रार्थना करें कि और भी कलीसियाएँ बनें! प्रभु की सेवा करने का मेरा जुनून हर दिन और मज़बूत होता जा रहा है।

आप आज के युवाओं के साथ क्या संदेश साझा करना चाहते हैं?

यूहन्ना 9:1-3 के अनुसार, जब यीशु ने जन्म से अंधे व्यक्ति को देखा, तो शिष्यों ने पूछा कि क्या यह उसके अपने पाप के कारण है या उसके माता-पिता के। लेकिन यीशु ने उत्तर दिया, **"न तो इस व्यक्ति ने और न ही इसके माता-पिता ने पाप किया था, बल्कि यह इसलिए हुआ कि परमेश्वर के कार्य उसमें प्रकट हों।"** प्रिय युवाओं, आप परमेश्वर की योजना से पैदा हुए हैं!

एस्तेर को विलासिता का आनंद लेने के लिए नहीं, बल्कि एक पीढ़ी को बचाने के लिए रानी बनाया गया था। आप जहाँ भी हों, परमेश्वर के लिए जो कुछ भी कर सकते हैं, करें। कठिनाइयों को सहन करें। वचन से प्रेम करें। प्रार्थना में दृढ़ रहें। आपके पास केवल एक ही जीवन है - इसे मसीह के लिए महान कार्य करने के लिए जिएँ। आइए इस राष्ट्र को यीशु के लिए मांग लें!

प्रिय युवा मित्रों, भाई मुरुगन का जन्म एक ऐसे धार्मिक परिवार में हुआ था जो यीशु को नहीं जानता था। फिर भी, यीशु ने उन्हें खोजा, उनका उद्धार किया, और उन्हें यहूदा बेनीहिन में परिवर्तित कर दिया। आज, परमेश्वर उन्हें होसुर क्षेत्र में "यीशु प्रभु है" सेवकाई के माध्यम से एक साहसी गवाह के रूप में उपयोग कर रहे हैं।

अनगिनत संघर्षों, घावों, अस्वीकृतियों और हृदयविदारक पीड़ाओं का सामना करने के बावजूद, उन्होंने कभी यीशु से मुँह नहीं मोड़ा। इसके बजाय, वे प्रभु के प्रति और अधिक भावुक होते गए। उनके अटूट उत्साह के प्रतिफलस्वरूप, परमेश्वर ने उन्हें एक ऐसी सेवकाई सौंपी जो एक करोड़ आत्माओं तक पहुँच चुकी है, और अलौकिक सामर्थ और आध्यात्मिक वरदानों के साथ उनका मार्गदर्शन करते है। जब आप प्रभु के लिए उत्साही होना चुनते हैं, तो बदले में प्रभु भी आपके लिए उत्साही होंगे।

युवा जीवन

यीशु उद्धार करता है युवा तंबू के माध्यम से "युवा जीवन" नामक मासिक पत्रिका तमिल, अंग्रेज़ी, हिंदी, मलयालम, तेलुगु, कन्नड़ और बांग्ला भाषाओं में प्रकाशित की जा रही है।

हर महीने प्रकाशित होने वाली युवा जीवन पत्रिका को आप प्राप्त करना चाहते हैं तो किस भाषा में चाहिए, उस भाषा के सामने टिक करके उस भाग का फोटो लेकर अपनी स्पष्ट पता विवरण के साथ हमें व्हाट्सऐप करें।

+91 9750955548 youth@jesuredeems.org

समाचार

अगस्त से देशभर के डाकघरों में UPI-आधारित भुगतान प्रणाली शुरू की जाएगी

वित्तीय लेनदेन को आधुनिक बनाने के निरंतर प्रयास के तहत, 1 अगस्त से पूरे भारत के डाकघरों में एक नई डिजिटल भुगतान प्रणाली शुरू की जाएगी। भारत में वर्तमान में लगभग 1.55 लाख डाकघर हैं, जिनमें से अधिकांश ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित हैं। भारतीय डाक विभाग तकनीकी प्रगति के साथ तालमेल बिठाने के लिए लगातार विकसित हो रहा है और वर्तमान डिजिटल रुझानों के अनुरूप सेवाओं की एक विस्तृत श्रृंखला प्रदान कर रहा है।

हाल के वर्षों में, वित्तीय लेनदेन के लिए UPI (यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस) के उपयोग में देशभर में तेजी से वृद्धि देखी गई है। इस प्रवृत्ति को देखते हुए, डाक विभाग ने डाकघर काउंटरों पर UPI-आधारित डिजिटल भुगतान लागू करने की योजना बनाई है, जिसका आम जनता द्वारा व्यापक रूप से उपयोग किया जा रहा है।

इस पहल का एक सफल पायलट रन कर्नाटक के मैसूर और बागलकोट जिलों के डाकघरों में चलाया गया था। इस परीक्षण के सकारात्मक परिणाम के बाद, विभाग अब इस प्रणाली को देशभर में लागू कर रहा है।

1 अगस्त से, डाकघरों में आने वाले ग्राहक काउंटरों पर क्यूआर कोड (Qr code) स्कैन करके आसानी से भुगतान कर सकेंगे। वे अपने लेन-देन के लिए पेटीएम, गूगल पे और फोनपे जैसे लोकप्रिय ऐप्स के माध्यम से यूपीआई सेवाओं का उपयोग कर सकते हैं। - ***दिनाकरन, 30 जून, 2025.***

फिर हज़ारों की छंटनी: माइक्रोसॉफ्ट ने छंटनी की एक और लहर की घोषणा की

तकनीकी दिग्गज माइक्रोसॉफ्ट ने एक बार फिर बड़े पैमाने पर छंटनी शुरू कर दी है—इस साल की यह चौथी छंटनी—जिससे वैश्विक आईटी उद्योग में हड़कंप मच गया है।

कंपनी ने कल बड़ी संख्या में कर्मचारियों को बर्खास्तगी नोटिस जारी करना शुरू कर दिया। हालाँकि, इस नवीनतम दौर में प्रभावित कर्मचारियों की सही संख्या का खुलासा नहीं किया गया है। इससे पहले, जनवरी में, माइक्रोसॉफ्ट ने अपने लगभग 1% कर्मचारियों की छंटनी की थी। मई में, 6,000 और कर्मचारियों की छंटनी की गई, उसके बाद जून में 305 और कर्मचारियों की छंटनी की गई।

अब, 2 जुलाई को छंटनी की एक नई लहर की घोषणा के साथ, माइक्रोसॉफ्ट के कर्मचारियों में अनिश्चितता और अशांति फैल गई है। ब्लूमबर्ग की एक रिपोर्ट के अनुसार, इस दौर से अनुमानित 9,000 कर्मचारी प्रभावित हो सकते हैं। - दीनाथंथी - ***3 जुलाई, 2025.***

रिश्तों में एक काँटा

मैं 28 साल का हूँ। मेरे तीन करीबी मित्र हैं जिनके साथ मैंने स्कूल और कॉलेज दोनों की पढ़ाई की है। मेरे माता-पिता ने हमेशा उन्हें अपने बेटों की तरह माना है। मेरी एक छोटी बहन भी है जिसका नाम कंचना है, जो अभी बी.ई. के अंतिम वर्ष में है। उसकी ख्वाहिश ग्रुप-2 की परीक्षा पास करके सरकारी नौकरी पाने की है। हाल ही में, मेरे मित्र कार्तिक ने मुझे बताया कि वह पिछले दो सालों से मेरी बहन से प्यार करता है। मैं पूरी तरह से स्तब्ध रह गया। अगर मेरे माता-पिता को पता चल गया, तो हमारे परिवार में भूचाल आ जाएगा। वे इसे कभी स्वीकार नहीं करेंगे। यहाँ तक कि यह हमारी सालों की मित्रता को भी तोड़ सकता है। मुझे समझ नहीं आ रहा कि आगे क्या करूँ। कार्तिक पर एक बड़ी ज़िम्मेदारी है—उसे विदेश जाना है, पैसा कमाना है और अपने परिवार का कर्ज़ चुकाना है। वह अभी विदेश में नौकरी की तैयारी कर रहा है। अगर यह मामला अभी तूल पकड़ता है, तो क्या उसकी नौकरी खतरे में पड़ जाएगी? क्या मेरी बहन की पढ़ाई प्रभावित होगी? मेरे माता-पिता का क्या होगा? और हमारी मित्रता का क्या होगा? पिछले तीन महीनों से ये सब सोचकर मैं गहरे मानसिक तनाव में हूँ। सच कहूँ तो मुझे समझ नहीं आ रहा कि क्या करूँ।

- मधन, चेंगलपट्टू

प्रिय मधन,

हम आपकी गहरी भावनात्मक उथल-पुथल को समझते हैं। एक तरफ आपकी बहन की पढ़ाई और भविष्य है; दूसरी तरफ आपके करीबी मित्र के विदेश में रहने के सपने चकनाचूर होने का डर। अगर आपके माता-पिता को पता चल गया तो संभावित आपदा। और सालों पुरानी मित्रता जो अब अधर में लटकी हुई है। साफ़ है कि आप महीनों से इस अंदरूनी लड़ाई को झेल रहे हैं।

मधन, सबसे पहले, घबराएँ नहीं। डर को अपने कामों का आधार न बनने दें। इस स्थिति को शांति और समझदारी से संभालने की कोशिश करें। जब साड़ी काँटों वाली झाड़ी में फँस जाती है, तो हमें उसे धीरे से सुलझाना चाहिए। अगर हम जल्दबाज़ी करेंगे, तो काँटा हाथ में चुभ जाएगा और साड़ी फट भी सकती है। लेकिन अगर हम सावधानी से काम लें, तो दोनों को बचाया जा सकता है।

कार्तिक के साथ शांति से खुलकर बातचीत शुरू करें। उसे अपने सपनों, ज़िम्मेदारियों और जिस दिशा में वह वर्तमान में दौड़ रहा है, उस पर विचार करने में मदद करें। उसे समझाएँ कि अगर वह इस प्रेम संबंध को जारी रखता है तो क्या परिणाम और चुनौतियाँ आ सकती हैं। अक्सर, जब लोग प्यार में पड़ते हैं, तो बाकी सब कुछ—महत्वाकांक्षाएँ, सपने और उद्देश्य—भावनाओं और उस व्यक्ति के आगे दब जाते हैं जिसे वे प्यार करते हैं। लोग कहते हैं, "प्यार अंधा होता है" यही कारण है।

इसी तरह, अपनी बहन के साथ खुले दिल से बात करने की कोशिश करें। उससे पूछें कि उसकी वर्तमान महत्वाकांक्षाएँ क्या हैं। संभावनाओं का आकलन करने में उसकी मदद करें—क्या वह व्यावहारिक रूप से अपनी पढ़ाई और रिश्ते, दोनों को संभाल सकती है? क्या ग्रुप-2 की परीक्षा पास करने का उसका सपना पूरा हो पाएगा? उसे यह समझने में मदद करें कि शिखर तक पहुँचने के लिए क्या करना चाहिए और सही रास्ते पर बने रहने के लिए किन चीज़ों से बचना चाहिए।

इस संकट से उबरने और सामान्य जीवन में लौटने के लिए, आपके मित्र और बहन को कुछ महत्वपूर्ण कदम उठाने होंगे

अपनी बहन के लिए व्यवहारिक कदम

- फ़िलहाल कार्तिक से बात न करना ही बेहतर होगा।
- उसके मोबाइल फ़ोन पर उसका नंबर ब्लॉक कर दें।
- सोशल मीडिया पर भावनात्मक या उत्तेजक अपडेट पोस्ट करने से बचें।
- बी.ई. के अपने अंतिम वर्ष पर पूरा ध्यान केंद्रित करें।
- उसकी पढ़ाई के साथ-साथ ग्रुप-2 परीक्षा की तैयारी शुरू कर दें।
- जब हम अपना पूरा ध्यान एक लक्ष्य पर लगाते हैं, तो स्वाभाविक रूप से हम ध्यान भटकने से बचते हैं।

अपने मित्र के लिए व्यवहारिक कदम

- कार्तिक को अभी आपके घर आने से बचना चाहिए।
- कंचना का नंबर उसके फ़ोन पर ब्लॉक कर दें।
- उसे विदेश में नौकरी पाने पर पूरा ध्यान केंद्रित करना चाहिए।
- उसे स्वयं को लगातार याद दिलाते रहना चाहिए कि अपने परिवार का कर्ज़ चुकाना उसकी पहली प्राथमिकता है।
- उसे सिर्फ़ भावनाओं के साथ नहीं, बल्कि उद्देश्य और स्पष्टता के साथ जीने के लिए प्रोत्साहित करें।

किसी भी रिश्ते में अलगाव हमेशा दर्दनाक होता है। लेकिन एक ऐसे रिश्ते को जारी रखना जो बनने के लिए नहीं बना है, और भी गहरे दर्द और जटिलताओं को जन्म दे सकता है। कार्तिक और कंचना दोनों को यह समझने की ज़रूरत है।

मधन, अगर वे आपकी सलाह सुनने को तैयार नहीं हैं, तो उन्हें संभावित परिणामों के बारे में स्पष्ट रूप से बताएँ। जीवन की कई परेशानियाँ अनिर्णय और स्पष्टता की कमी से पैदा होती हैं। आपको ही उन्हें यह समझने में मदद करनी चाहिए कि आगे क्या होने वाला है।

आजकल के युवा अक्सर बिना सोचे-समझे प्रेम में पड़ जाते हैं। वे वास्तविकता से ज़्यादा भावनाओं में जीते हैं और शायद ही कभी इस बारे में सोचते हैं कि आगे क्या होगा।

अगर कार्तिक और कंचना इस रिश्ते को जारी रखते हैं, तो इसके संभावित परिणाम ये हैं...

- आपके माता-पिता गुस्से में आकर आपको कार्तिक से रिश्ता तोड़ने का आदेश दे सकते हैं।
- कंचना की शिक्षा बाधित हो सकती है और उसका ग्रुप-2 का सपना चकनाचूर हो सकता है।
- उसे बेवजह भावनात्मक परेशानी हो सकती है।
- आपके चार मित्रों के ग्रुप में अनचाहे मुद्दे उठ सकते हैं, जिससे फूट पड़ सकती है।

▸ कार्तिक अपनी नौकरी की तैयारियों पर ध्यान केंद्रित नहीं कर पा रहा है और मानसिक तनाव में है। उसका सपना और उसकी बोझिल ज़िंदगी और भी भारी बोझ बन सकती है।

आप क्या कर सकते हैं...

▸ अगर कार्तिक और कंचना दोनों आपके मार्गदर्शन का पालन करें, क्रमशः पढ़ाई और नौकरी की तलाश पर ध्यान केंद्रित करें, तो उनका भविष्य और सपने बरकरार रह सकते हैं।

▸ कॉलेज के दौरान, युवा अक्सर जीवनसाथी चुनने के लिए पर्याप्त परिपक्व नहीं होते हैं। यह सिर्फ़ एक भावनात्मक

लगाव हो सकता है। अगर वे इसे समझदारी से संभालें, तो कई समस्याओं से बचा जा सकता है।

▸ कार्तिक को पहले प्रोत्साहित करें की वह विदेश जाएँ, उसकी ज़िम्मेदारियाँ संभालें और उसके परिवार के कर्ज़ चुकाएँ।

▸ अपनी बहन को उसकी पढ़ाई और सरकारी नौकरी पाने के सपने पर ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रेरित करें।

▸ साथ ही, अपने माता-पिता को स्थिति को समझने में मदद करें और प्रेम से अपनी बहन को इस रिश्ते से दूर

जाने और सामान्य जीवन में लौटने के लिए प्रेरित करें। ठेस पहुँचाने वाले शब्दों से बचें—उसे सहारे की ज़रूरत है, ज़ख्मों की नहीं।

▸ अपनी बहन को कुछ महीने दें। वह शायद गहरे भावनात्मक ज़ख्मों से गुज़र रही होगी। उसे भूलने और अपना ध्यान पढ़ाई और अन्य स्वस्थ गतिविधियों पर केंद्रित करने का समय दें।

अगर आप चारों मिलकर समझदारी से स्थिति को संभालें, तो किसी को ठेस पहुँचाए बिना इस समस्या का समाधान हो सकता है।

धैर्य रखें। जल्दबाज़ी न करें। अगर आप धैर्य और समझदारी से काम लेंगे, तो कोई भी रिश्ता टूटने की ज़रूरत नहीं है।

▸ आपकी बहन का सपना साकार होगा।

▸ आपके मित्र का सपना पूरा होगा, और उसके जीवन का बोझ हल्का हो जाएगा।

▸ आपकी मित्रता बरकरार रहेगी।

शुभकामनाएं।